४१. और जान लो कि तुम जिस तरह का जो भी लड़ाई का माल[1] (परिहार) हासिल करो उस में से पाँचवा हिस्सा तो अल्लाह[2] और रसूल और रिश्तेदारों और यतीमों और गरीबों और मुसाफ़िरों के लिये है, अगर तुम ने अल्लाह पर ईमान रखा है और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर उस दिन उतारा है जो सच और झूठ के बीच विलगाव का[3] था, जिस दिन दोनों सेनायें भिड़ गईं थीं, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَاعْلَمُوٓا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُۥ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينِ وَٱبْنِ ٱلسَّبِيلِ إِن كُنتُمْ ءَامَنتُم بِٱللَّهِ وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ ٱلْفُرْقَانِ يَوْمَ ٱلْتَقَى ٱلْجَمْعَانِ ۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿41﴾

४२. जबकि तुम क़रीब के किनारे पर और वे दूर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से (बहुत) नीचे थे, अगर तुम आपस में वादा करते तो मुक़र्रर वक़्त पर पहुँचने में इख़्तिलाफ़ कर जाते, लेकिन अल्लाह को एक काम कर ही डलाना था जो मुक़र्रर हो चुका था, ताकि जो नाश हो वह दलील पर (यानी तय जानकर) नाश हो और जो ज़िन्दा रह जाये वह भी दलील पर (सच पहचान कर) ज़िन्दा रहे और अल्लाह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।

إِذْ أَنتُم بِٱلْعُدْوَةِ ٱلدُّنْيَا وَهُم بِٱلْعُدْوَةِ ٱلْقُصْوَىٰ وَٱلرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۚ وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ لَٱخْتَلَفْتُمْ فِي ٱلْمِيعَٰدِ ۙ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ ٱللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنۢ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿42﴾

---

[1] ग़नीमत (परिहार) से मुराद वह माल है जो लड़ाई में काफ़िरों को हरा के हासिल किया जाता है, पहले की क़ौमों में यह रीति थी कि लड़ाई के ख़त्म होने के बाद ग़नीमत को जमा किया जाता और आकाश से आग आकर उसे जला कर भस्म कर देती, लेकिन मुसलमानों के लिये ग़नीमत जायेज़ बना दिया गया और जो माल बिना लड़ाई, सुलह या कर (जिज़्या) के ज़रिये हासिल हो उसे «फ़ैय» कहा जाता है, कभी ग़नीमत को भी «फ़ैय» कहा जाता है।

[2] अल्लाह का लफ़्ज़ सिर्फ़ अच्छे के लिए या इसलिये है कि हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक तो वही है और हुक्म भी उसी का चलता है, मुराद अल्लाह और रसूल के हिस्सा से एक ही है।

[3] बद्र की लड़ाई १७ रमज़ानुल मुबारक २ हिजरी को हुई, उस दिन को यौमुल फ़ुरक़ान इसलिए कहा गया कि यह काफ़िरों और मुसलमानों के बीच पहली लड़ाई थी, और मुसलमानों को जीत और असर ग़ल्बा करके यह साबित कर दिया कि इस्लाम सच है और कुफ़्र और शिर्क (बहुदेववाद) झूठ है।

४३. जब कि तुझे तेरे सपने में अल्लाह ने उन की तादाद कम दिखाई, अगर उन को ज़्यादा दिखाता तो तुम बुज़दिल बन जाते और इस बारे में आपसी इख़्तिलाफ़ करते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह सीनों की बातों को जानने वाला है।[1]

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿43﴾

४४. और जब कि उस ने मिलने के समय उन्हें तुम्हारी नज़र में बहुत कम दिखाया और तुम्हें उन की नज़र में कम दिखाया, ताकि अल्लाह (तआला) उस काम को आख़िर तक पहुँचा दे, जो करना ही था, और सभी उमूर अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿44﴾

४५. हे ईमानवालो! जब तुम किसी (विरोधी) सेना से भिड़ जाओ, तो अड़ जाओ और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿45﴾

४६. और अल्लाह की और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करते रहो, आपस में इख़्तिलाफ़ मत रखो, नहीं तो बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी, और सब्र व यक़ीन रखो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿46﴾

४७. और उन लोगों जैसे न बनो, जो घमंड करते हुए और लोगों में अभिमान करते हुए अपने घरों से चले और अल्लाह के रास्ते से रोकते थे, जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह उसे घेर लेने वाला है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿47﴾

[1] अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को सपने में मूर्तिपूजकों की तादाद कम दिखायी और वही तादाद आप ﷺ ने सहाबा के सामने बयान कर दी, जिस से उनकी हिम्मत बढ़ गई, और इस के ख़िलाफ़ काफ़िरों की तादाद ज़्यादा दिखायी जाती तो सहाबा के दिलों में बुज़दिली पैदा होती और आपसी इख़्तिलाफ़ पैदा होने की उम्मीद थी, लेकिन अल्लाह ने इन दोनों हालतों से मुसलमानों को बचा लिया।

४८. और जब कि उनके अमलों को शैतान उन्हें सुशोभित (ज़ीनत वाला) दिखा रहा था और कह रहा था कि इंसानों में से कोई भी आज तुम पर ग़ालिब नहीं हो सकता, मैं ख़ुद तुम्हारा समर्थक (हिमायती) हूँ, लेकिन जब दोनों गुट ज़ाहिर हुए, तो अपनी एड़ियों के बल पीछे पलट गया और कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ, मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे,[1] मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह (तआला) सख़्त अज़ाब वाला है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّنكُمْ إِنِّيٓ أَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّيٓ أَخَافُ اللّٰهَ ۚ وَاللّٰهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿48﴾

४९. जब कि मुनाफ़िक (द्वयवादी) लोग कह रहे थे और वह भी जिनके दिलों में रोग था[2] कि उन्हें तो उन के धर्म ने धोके में डाल दिया है, और जो भी अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह तआला बेशक ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

إِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿49﴾

५०. और काश कि तू देखता जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, उन के मुँह और कमर पर मार मारते हैं (और कहते हैं) तुम जलने के अज़ाब का मज़ा चखो।[3]

وَلَوْ تَرٰىٓ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبٰرَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿50﴾

---

[1] मूर्तिपूजक जब मक्का से निकले तो उन्हें अपने ख़िलाफ़ क़बीले बनी बक्र बिन किनाना से यह डर था कि वे पीछे से उन्हें नुक़सान न पहुँचायें, इसलिए शैतान सुराक़ा बिन मालिक के शक्ल में आया, जो बनी बक्र बिन किनाना के मुखिया थे, और उन्होंने न केवल जीत की ही भविष्यवाणी (पेशीन गोई) की, बल्कि अपनी हिमायत का यक़ीन दिलाया, लेकिन जब फ़रिश्तों को उस ने देखा तो उसे अल्लाह की मदद मालूम हुई तो एड़ियों के बल भाग खड़ा हुआ।

[2] इस से मुराद या तो वह मुसलमान हैं, जो नये-नये मुसलमान हुए थे और मुसलमानों की कामयाबी पर उन्हें शक था, या इस से मुराद मूर्तिपूजक हैं और यह भी मुमकिन है कि मदीने के रहने वाले यहूदी मुराद हों।

[3] कुछ मुफ़स्सिरों ने इसे बद्र की लड़ाई में मक़तूल मूर्तिपूजकों के बारे में बताया है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि जब मूर्तिपूजक मुसलमानों की तरफ़ आते तो मुसलमान उन के मुँह पर तलवारें मारते, जिस से बचने के लिए वे पीठ फेर कर भागते, तो फ़रिश्ते उन के पिछले हिस्से पर तलवार मारते, लेकिन यह आम आयत है जो हर काफ़िर और मूर्तिपूजक को शामिल किये हुए है।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿51﴾

५१. यह उन अमलों के सबब जो तुम्हारे हाथों ने पहले ही भेज रखा है, बेशक अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿52﴾

५२. फ़िरऔन के पैरोकारों की हालत की तरह और उन के बुज़ुर्गों के, कि उन्होंने अल्लाह की आयतों पर यक़ीन नहीं किया तो अल्लाह ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया, अल्लाह (तआला) बेशक ज़बरदस्त और सख़्त अज़ाब वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿53﴾

५३. ये इसलिए कि अल्लाह (तआला) ऐसा नहीं कि किसी क़ौम पर कोई नेमत कर के फिर बदल दे, जब तक कि वह ख़ुद अपनी उस हालत को न बदल दें, जो कि उनकी अपनी थी,[1] और यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿54﴾

५४. फ़िरऔन की आल और उनके पहले के लोगों के बराबर कि उन्होंने अपने रब की बातों को झुठलाया तो हम ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें तबाह कर दिया और फ़िरऔन वालों को डुबो दिया और यह सभी ज़ालिम थे।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿55﴾

५५. सभी जीवों से बुरे अल्लाह के नज़दीक वह हैं जो कुफ़्र करें फिर वह ईमान न लायें।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿56﴾

५६. जिन से आप ने वादा लिया, फिर भी वे अपना वादा हर बार तोड़ते हैं और कभी भी तक़वा नहीं बरतते।

---

[1] इसका मतलब यह है कि जब तक कोई क़ौम शुक्र का रास्ता अपनाकर और अल्लाह तआला के ज़रिये बताये गये नाजायेज़ से मुख मोड़ कर अपनी हालतों और अख़लाक़ों को बदल नहीं लेती अल्लाह तआला उस पर अपने सुख-सुविधाओं और नेमत के दरवाज़े बन्द नहीं करता, दूसरे लफ़्ज़ों में अल्लाह तआला गुनाहों के सबब अपनी नेमतें ख़त्म कर देता है और अल्लाह तआला की रहमत का पात्र (मुस्तहक़) होने के लिए ज़रूरी है कि गुनाहों से बचा जाये।

५७. इसलिए जब कभी तू उन पर लड़ाई में ग़ालिब हो जाओ तो उन्हें ऐसी मार मारो कि उन के पिछले भी भाग खड़े हों,[1] शायद वह नसीहत हासिल कर लें।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿57﴾

५८. और अगर तुझे किसी क़ौम से धोखेबाज़ी का डर हो तो बराबरी की हालत में उन की सुलह तोड़ दे,[2] अल्लाह ख़्यानत करने वालों से मुहब्बत नहीं रखता।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿58﴾

५९.और काफ़िर यह ख़्याल न करें कि वे भाग निकले, बेशक वे मजबूर नहीं कर सकते।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿59﴾

६०. और तुम उन से (लड़ने के) लिये अपनी इस्तेताअत भर क़ूवत तैयार करो, और घोड़े तैयार रखने की भी,[3] कि उस से तुम अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को डरा सको और उन के सिवाय दूसरों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें अच्छी तरह जान रहा है, और जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जायेगा और तुम्हारे हक़ का नुक़सान नहीं किया जायेगा।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿60﴾

---

[1] شَرِّدْ بِهِم का मतलब है कि उनको ऐसी मार मारो कि जिस से उन के मानने वालों और साथियों में भगदड़ मच जाये, यहाँ तक कि वह आप की तरफ़ इस उम्मीद से मुख ही न करें कि कहीं उनका भी वही नतीजा न हो जो उनके पहले के लोगों का हुआ।

[2] धोखेबाज़ी से मुराद है जिस क़ौम से सुलह हुई, उस से यह डर कि वह सुलह तोड़ दे।

[3] قُوَّة की तफ़सीर नबी करीम के क़ौल से तीर चलाना है, (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारः) क्योंकि उस समय यह बहुत बड़ा लड़ाई का हथियार था, और महत्वपूर्ण (अहम) शिक्षा थी, जिस तरह घोड़े लड़ाई के लिए बहुत ज़रूरी थे, जैसाकि इस आयत से भी वाज़ेह होता है, लेकिन अब तीर चलाने और घोड़े की लड़ाई में इतनी ज़रूरत और अहमियत नहीं रही, इसलिए (وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم) के अधीन आजकल के आधुनिक हथियार आते हैं (जैसे-मीज़ाईल, टैंक, बम, और लड़ाई के विमान और पोत और लड़ाई के लिए पनडुब्बियाँ वग़ैरह) जिनकी तैयारी ज़रूरी है।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿61﴾

६१. और अगर वे सुलह की तरफ झुकें, तो तू भी सुलह की तरफ़ झुक जा, और अल्लाह पर भरोसा रख, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿62﴾

६२. और अगर वे तुझ से धोका करना चाहेंगे तो अल्लाह तुझे बस है, उसी ने अपनी मदद से और ईमानवालों से तेरा समर्थन कराया है।

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿63﴾

६३. और उन के दिलों में आपसी मुहब्बत भी उसी ने पैदा किया है, अगर आप धरती की सभी चीज़ें ख़र्च कर देते तो भी उन के दिलों में मुहब्बत का जज़्बा पैदा नहीं कर सकते थे[1] लेकिन अल्लाह ही ने उन के दिलों में मुहब्बत डाल दिया, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿64﴾

६४. हे नबी (ईशदूत)! आप और आप के पैरोकार मुसलमानों को अल्लाह बस है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿65﴾

६५. हे नबी! मुसलमानों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का शौक़ दिलाओ, अगर तुम में से बीस साबिर भी होंगे तो भी दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे, और अगर तुम में से एक सौ होंगे तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे,[2] इस सबब कि वे नासमझ लोग हैं।

اَلْـئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿66﴾

६६. अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह अच्छी तरह जानता है कि तुम में कमज़ोरी है तो अगर तुम में से एक सौ साबिर होंगे तो वे दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुम

[1] इन आयतों में अल्लाह तआला ने नबी ﷺ और ईमानवालों पर जो एहसान किये उन में से एक बड़े एहसान को बयान किया है, वह यह कि नबी ﷺ की ईमानवालों के ज़रिये मदद की, वे आप ﷺ के दाहिने हाथ और रक्षक और सहायक बन गये, ईमानवालों पर यह एहसान किया कि इस से पहले जो उन में दुश्मनी थी उसे मुहब्बत में बदल दिया।

[2] यह मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी है कि तुम्हारे मज़बूती से लड़ने वाले २० सैनिक दो सौ पर और सौ एक हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे।

में से एक हज़ार होंगे तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे[1] और अल्लाह (तआला) सब्र करने वालों के साथ है।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُۥٓ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَضَ ٱلدُّنْيَا وَٱللَّهُ يُرِيدُ ٱلْءَاخِرَةَ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

६७. नबी के हाथ में बन्दी नहीं चाहिए, जब तक कि देश में हिंसक युद्ध न हो जाये तुम तो दुनिया के धन चाहते हो और अल्लाह का इरादा आख़िरत का है, और अल्लाह तआला ग़ालिब हिक्मत वाला है।

لَّوْلَا كِتَٰبٌ مِّنَ ٱللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَآ أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

६८. अगर पहले से ही अल्लाह की तरफ़ से बात लिखी न होती[2] तो जो कुछ तुम ने लिया है उसके बारे में तुम्हें कोई सख़्त अज़ाब होता।

فَكُلُوا۟ مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَٰلًا طَيِّبًا ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾

६९. और जो हलाल और पाक धन लड़ाई से हासिल करो उसे खाओ[3] और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

---

[1] पिछला हुक्म सहाबा पर भारी हुआ, क्योंकि इसका मतलब था एक मुसलमान दस काफ़िरों के लिए, बीस दो सौ के लिए और एक सौ एक हज़ार के लिए काफ़ी है, और काफ़िरों के सामने मुसलमानों की इतनी तादाद हो तो जिहाद फ़र्ज़ और इससे बचना नाजायेज़ है। इसलिए अल्लाह तआला ने कमी करके एक और दस के अनुपात (तनासुब) को एक और दो का अनुपात कर दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-अंफ़ाल) अब इस अनुपात पर जिहाद फ़र्ज़ और इस से कम पर फ़र्ज़ नहीं है।

[2] इस बारे में मुफ़स्सिरों में इख़्तेलाफ़ है कि यह लिखी हुई बात क्या थी? कुछ ने कहा कि इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री को नाजायेज़ करने का हुक्म है, यानी चूंकि यह तक़्दीर का लेख लिखा था कि मुसलमानों को लड़ाई में मिली धन-सामग्री नाजायेज़ होगी, इसलिए तुम ने फ़िदिया ले कर जायेज़ काम किया, अगर ऐसा न होता तो फ़िदिया लेने के सबब तुम्हें बहुत अज़ाब सहन करना पड़ता, कुछ ने बद्र में शहीद होने वालों की तौबा इस से मुराद लिया है, कुछ ने रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी को अज़ाब न आने का सबब मुराद लिये हैं आदि। (तफ़सीली जानकारी के लिए देखें फ़तहुल क़दीर)

[3] इस में लड़ाई से मिली माल-सामग्री को हलाल और पाक ठहराकर फ़िदिया को हलाल होना बताया गया है, जिस से इस बात का समर्थन (ताईद) होता है कि "लिखी हुई बात" शायद इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿70﴾

७०. हे नबी ! अपने हाथ के नीचे के बन्दियों से कह दो कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में अच्छा इरादा देखेगा तो जो कुछ तुम से लिया गया है, उस से अच्छा तुम्हें अता करेगा, और फिर गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿71﴾

७१. और अगर वे तुझ से ख़यानत का इरादा करेंगे तो यह तो इस से पहले ख़ुद अल्लाह के साथ ख़यानत कर चुके हैं, आख़िर उस ने उन्हें पकड़वा दिया, और अल्लाह तआला इल्म वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰۗىِٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰي يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰي قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿72﴾

७२. जो लोग (इस्लाम) धर्म पर ईमान लाये और हिजरत (प्रस्थान) कर गये और अपने माल, जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (धर्मयुद्ध) किये,[1] और जिन लोगों ने उन को पनाह और मदद दी[2] यह सब आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं, और जो ईमान लाये लेकिन हिजरत (प्रवास) नहीं किया तुम से उनकी तनिक भी मित्रता नहीं जब तक कि वह हिजरत (देश त्याग) न करें।[3] हाँ! अगर वह धर्म के बारे में तुम से मदद माँगें तो तुम पर मदद देना ज़रूरी है, सिवाये उन लोगों के कि तुम्हारे और उन के बीच मुआहदा है, और जो भी तुम कर रहे हो अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿73﴾

७३. और काफ़िर आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं, अगर तुम ने ऐसा न किया तो देश में फ़ित्ना होगा और बहुत फ़साद पैदा हो जायेगा।

---

[1] ये "सहाबा" मुहाजेरीन (जो मक्का नगरी छोड़ कर मदीना आये) कहलाते हैं, जो फ़ज़ीलत में सहाबा में सब से बेहतर हैं।

[2] ये अन्सार कहलाते हैं (ये मदीना के असल निवासी हैं) ये फ़ज़ीलत के दूसरे मुक़ाम पर हैं।

[3] यह सहाबा का तीसरा दर्जा है जो मुहाजिर और अंसार के सिवाय हैं, ये मुसलमान होने के बाद अपने ही इलाक़े और जाति में रहते थे, इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारे हक़ या विरासत के वे हक़दार नहीं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ (74)

७४. जो लोग ईमान लाये और हिजरत किया और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने पनाह दिया और मदद पहुँचायी, यही लोग सच्चे ईमानवाले हैं, उन के लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (75)

७५. और जो लोग इस के बाद ईमान लाये और हिजरत किया और तुम्हारे साथ होकर जिहाद किया, तो यह लोग भी तुम में से ही हैं, और रिश्ते वाले उन में से आपस में एक-दूसरे के ज़्यादा क़रीब हैं अल्लाह के हुक्म में,[1] बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ

सूरतुत्तौबः-९

सूरः तौबः* मदीने में उतरी और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

بَرَاۗءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ (1)

१. (यह) अल्लाह और उसके रसूल (दूत) की तरफ़ से बेज़ारी का एलान है[2] उन मुशरिकों के बारे में जिन से तुम ने मुआहदा किया है।

---

[1] भाईचारे और क़सम की बिना पर विरासत में जो हिस्सेदार बनते थे, इस आयत में उसे ख़ारिज कर दिया गया है, अब वारिस वही होगा जो जिसका वंशीय या ससुराली रिश्ता होगा।

* **नाम का सबब** : मुफ़स्सिरों ने इस के कई नामों का बयान किया है, लेकिन ज़्यादा मशहूर दो नाम हैं, पहले "तौबा", इसलिए कि इस में ईमानवालों की तौबा क़ुबूल होने का बयान है। दूसरा नाम "बराअत" है, इसलिए कि इस में मूर्तिपूजकों से सुलह से अलग होने का एलान किया गया है। यह क़ुरआन मजीद का एक ही सूरः है, जिसके शुरू में बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखा है, इस के भी कई सबब किताबों में लिखे हुए हैं, लेकिन ज़्यादा सही बात यह लगती है कि सूरः अंफ़ाल और सूरः तौबा इन दोनों के बारे में समानता पायी जाती है, इसलिए यह सूरः अंफ़ाल की पूरक (तकमिला) या बाक़ी है, यह सात बड़ी सूरतों में से सातवीं बड़ी सूरः है, जिन्हें सबआ तिवाल कहा जाता है।

[2] फ़त्ह मक्का के बाद ९ हिजरी में नबी ﷺ ने हज़रत अबू बक्र, हज़रत अली (رضی اللہ عنہما) और दूसरे कुछ सहाबा को यह आयतें और हुक्म दे कर भेजा ताकि वह मक्के में उनको आम लोगों के सामने एलान कर दें, उन्होंने आप ﷺ के हुक्म के मुताबिक़ एलान कर दिया कि कोई इंसान अब (काबा) का नंगा तवाफ़ (परिक्रमा) नहीं कर सकेगा, बल्कि अगले साल से किसी मूर्तिपूजक को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के हज का हुक्म नहीं दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी नं॰ १३६९, मुस्लिम नं॰ ९८३)

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿2﴾

२. इसलिए (हे मुश्रिको!) तुम देश में चार महीने सफ़र कर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते और अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है।

وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿3﴾

३. अल्लाह और उस के रसूल (दूत) की तरफ़ से हज अकबर के दिन[1] साफ़ एलान है कि अल्लाह मुश्रिकों से बेज़ार है और उसका रसूल भी, अगर अब भी तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम मुँह फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकोगे और काफ़िरों को सख़्त अज़ाब की ख़बर दे दो।

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿4﴾

४. लेकिन वह मुश्रिक जिन से तुम ने मुआहदा कर लिया है, और उन्होंने तुम्हें ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुंचाया और तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद नहीं की तो तुम भी मुआहदा की मुद्दत उन के साथ पूरी करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों से मुहब्बत करता है।

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

५. फिर हुरमत वाले महीनों[2] के ख़त्म होते ही मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो, उन्हें

---

[1] सहीहैन (बुख़ारी और मुस्लिम) और दूसरी सहीह हदीस की किताबों से साबित है कि हज अकबर के दिन से मुराद योमुन्नहर (यानी १० ज़िलहिज्जा) का दिन है। (तिर्मिज़ी नं॰ ९५७ बुख़ारी नं॰ ४६५५, मुस्लिम नं॰ ९८२) उसी दिन मिना के मुक़ाम पर मुक्ति (बराअत) का एलान किया गया, १० ज़िलहिज्जा को हज अकबर इसलिए कहा जाता है कि इस दिन हज की सब से ज़्यादा और ख़ास दीनी रीतियों को अदा किया जाता है, और आम लोग उमरे को हज असग़र कहा करते थे, इसलिए उमरे से अच्छा करने के लिए हज को महा हज (अकबर) कहा गया। लोगों में जो यह मशहूर है कि जुमआ को आये वह हज अकबर है, बेबुनियाद है।

[2] इन हुरमत वाले महीनों से मुराद क्या है? इस में इख़्तिलाफ़ है, एक ख़्याल तो यह है कि इस से मुराद वही चार महीने हैं जो हुरमत वाले हैं, यानी मुहर्रम, रजब, ज़ीक़ाद: और ज़िलहिज्जा। लेकिन इमाम इब्ने कसीर के ऐतबार से यहाँ निषेधित महीने नहीं हैं, बल्कि १० ज़िलहिज़्जा से १० रबीउस्सानी तक के चार महीने मुराद हैं, उन्हें हुरमत वाले महीने इसलिए कहा गया है कि बराअत के एलान के बिना पर इन चार महीनों में उन मूर्तिपूजकों से लड़ने और उन के ख़िलाफ़ किसी भी कार्यवाही का हुक्म नहीं था। मुक्ति (बराअत) के एलान के बुनियाद पर यह दलील ज़्यादा अच्छी मालूम होती है।

बन्दी बनाओ, उनका घेराव करो और उन के ताक में हर घाटी में जा बैठो, लेकिन अगर वे तौबा कर लें और नमाज पाबन्दी से (लगातार) पढ़ने लगें और ज़कात अदा करने लगें तो तुम उनका रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (5)

६. अगर मुश्रिकों में से कोई तुझ से पनाह माँगे तो तू उसे पनाह दे दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह का क़ौल सुन ले फिर उसे उस के शान्ति स्थान तक पहुँचा दे[1] यह इसलिए कि वह लोग नावाक़िफ़ हैं।[2]

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ (6)

७. मूर्तिपूजकों का वादा अल्लाह और उस के रसूल के क़रीब कैसे रह सकता है, सिवाय उन के जिन से मुआहदा तुम ने मस्जिदे हराम के पास किया है तो जब तक वे लोग तुम से मुआहदा निभायें, तुम भी उन से वादा की पासदारी करो, अल्लाह (तआला) परहेज़गार लोगों से मुहब्बत करता है।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (7)

८. उन के वादों का क्या भरोसा, उनको अगर तुम पर ग़ल्बा मिल जाये तो न ये सम्बन्ध का ख़्याल करें न अहद व पैमान का, अपने मुँह से ये तुम्हें परिचा रहे हैं, लेकिन इनके दिल नहीं

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ (8)

[1] इस आयत में जंगजू मूर्तिपूजकों के बारे में एक छूट दी गयी है कि अगर कोई मूर्तिपूजक पनाह माँगे तो उसे पनाह दे दो, यानी उसे अपनी हिफ़ाज़त में महफ़ूज रखो ताकि कोई दूसरा मुसलमान उसे मार न सके, ताकि उसे अल्लाह की बातें सुनने और इस्लाम धर्म क़ुबूल करने का नसीब हासिल हो जाये, लेकिन अगर अल्लाह की बातें सुनने के बाद भी वह इस्लाम दीन नहीं क़ुबूल करता है, तो उसे उस के महफ़ूज मकाम तक पहुँचा दो, यानी अपनी हिफ़ाज़त का कर्त्तव्य आख़िर पल तक निभाना है, जब तक वह अपने महफ़ूज मकाम तक नहीं पहुँच जाता उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।

[2] यानी पनाहगीरों को पनाह की छूट इसलिए अता की गयी है क्योंकि यह लोग नावाक़िफ़ हैं, मुमकिन है अल्लाह और उस के रसूल की बातें उन के इल्म में आयें और मुसलमानों के अख़लाक और किरदार वह देखें, तो इस्लाम धर्म क़ुबूल करके आख़िरत के अज़ाब से बच जायें, जिस तरह हुदैबिया की सुलह के बाद बहुत से काफ़िर मदीना आते-जाते रहे, तो मुसलमानों के अख़लाक और किरदार को देख कर इस्लाम धर्म को समझने में बहुत मदद मिली और बहुत से लोग मुसलमान हो गये।

मानते और उनमें से ज़्यादातर तो फ़ासिक़ हैं।

اِشْتَرَوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿9﴾

९. उन्होंने अल्लाह की आयतों को वहुत कम दाम में बेच दिया और उस के रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।

لَا یَرْقُبُوْنَ فِیْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّ لَا ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿10﴾

१०. यह तो किसी मुसलमान के हक़ में किसी रिश्ता का या अहद की कभी फ़िक्र नहीं करते, यह हैं ही हद से गुज़रने वाले।

فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِی الدِّیْنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿11﴾

११. अब भी अगर ये तौबा (पश्चाताप) कर लें और नमाज़ लगातार पढ़नें लगें और ज़कात देते रहें, तो तुम्हारे दीनी भाई हैं[1] और हम तो जानकारों के लिए अपनी आयतों को तफ़सील के साथ बयान कर रहे हैं।

وَ اِنْ نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَیْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَنْتَهُوْنَ ﴿12﴾

१२. अगर ये लोग अहद और वादे के बाद भी अपना अहद तोड़ दें और तुम्हारे धर्म की निन्दा भी करें, तो तुम भी उन काफ़िरों के सरदारों से भिड़ जाओ, उनकी क़सम कोई चीज़ नहीं, मुमकिन है कि इस तरह वह रुक जायें।

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ وَ هَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَ هُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿13﴾

१३. तुम उन लोगों के सिर कुचलने के लिए क्यों तैयार नहीं होते, जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ दिया और (आख़िर) ईशदूत (रसूल) को देश से निकाल देने की सोच में हैं। और ख़ुद ही पहली बार उन्होंने तुम से छेड़ की है, क्या तुम उन से डरते हो? अल्लाह ही को सब से ज़्यादा हक़ है कि तुम उस से डर रखो अगर तुम ईमान वाले हो।

[1] नमाज़, तौहीद (एकेश्वरवाद में यक़ीन) और रिसालत के क़ुबूल करने के बाद, इस्लाम का सबसे अहम और ख़ास रुक्न है जो अल्लाह का हक़ है, उस में अल्लाह की इबादत के कई रूप हैं, इस में हाथ बाँधकर खड़ा होना है, रुकूअ और माथा टेकना है, दुआ और अज़कार है, अल्लाह की अज़मत और बड़ाई का और अपनी कमज़ोरी और लाचारी का प्रदर्शन (इज़हार) है। इबादत के यह सारे तरीक़े और रूप सिर्फ़ अल्लाह के लिए योग्य हैं, नमाज़ के बाद दूसरा फ़रीज़ा ज़कात अदा करना है, जिस में इबादती काम होने के साथ-साथ दूसरे इंसानों पर उन के नैतिक (अख़लाक़ी) हक़ भी शामिल हैं।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ﴿14﴾

१४. उन से तुम जंग करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको तक़लीफ़ देगा, उन्हें ज़लील और बेइज़्ज़त करेगा, तुम्हें उन पर मदद देगा और मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿15﴾

१५. और उन के दिलों के दुख और ग़ुस्से को दूर करेगा[1] और वह जिसकी तरफ़ चाहता है रहम से आकर्षित (मुतवज्जिह) होता है, और अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿16﴾

१६. क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे? अगरचे कि अल्लाह (तआला) ने तुम में से उन्हें मुमताज़ नहीं किया है जो जिहाद के सिपाही हैं, और जिन्होंने अल्लाह के और उस के रसूल के और ईमानवालों के सिवाय किसी को दोस्त नहीं बनाया, और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो तुम कर रहे हो।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿17﴾

१७. मुमकिन नहीं कि मूर्तिपूजक अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि हाल यह है कि यह अपने कुफ़्र के ख़ुद गवाह हैं,[2] उन के अमल बरबाद और बेकार हैं, और वे दायमी तौर से नरकवासी हैं।[3]

---

[1] यानी जब यह मुसलमान कमज़ोर थे, तो यह मूर्तिपूजक उन पर ज़ुल्म करते थे, जिसके सबब मुसलमानों के दिल उनसे बहुत दुखी और घायल थे, जब मुसलमानों के हाथों वह मारे जायेंगे और ज़िल्लत व रुसवाई उनकी तक़दीर में आयेगी तो फ़ितरी बात है कि इस से उत्पीड़ित और दुखी मुसलमानों के दिलों को ठंढक मिलेगी और मन का ग़ुस्सा कम होगा।

[2] مساجد الله से मुराद मस्जिदे हराम है, बहुवचन (जमा) लफ़्ज़ इसलिए इस्तेमाल किया गया है कि दुनिया की सभी मस्जिदों का यह केन्द्र (क़िब्ला) है, या अरबों में एक वचन के लिए बहुवचन का इस्तेमाल भी जायेज़ कहा जाता है, मतलब यह है कि अल्लाह के घर (यानी मस्जिदे हराम) की तामीर करना या बसाना मुसलमानों का काम है, न कि उनका जो कुफ़्र और शिर्क करते हैं, और उसको क़ुबूल भी करते हैं, जैसे कि वे तलबिया में कहा करते थे :
((لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، إِلَّا شَرِيكًا هُوَ لَكَ، تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ)) (सहीह मुस्लिम)

[3] यानी उन के वे अमल जो देखने में नेक लगते हैं, जैसे ख़ानये काअबा का तवाफ़, उमरः और हाजियों की ख़िदमत आदि (वग़ैरह)। लेकिन ईमान के बिना वह ऐसे पेड़ की तरह हैं जो बिना छाया और बिना फल के हो या वे उन फूलों की तरह हैं जिन में ख़ुशबू नहीं है।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَوٰةَ وَآتَى الزَّكَوٰةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰٓئِكَ أَن يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ (18)

१८. अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं, जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, नमाज़ बराबर पढ़ते हों, ज़कात देते हों, और अल्लाह के सिवाय किसी से न डरते हों, मुमकिन है कि यही लोग बेशक हिदायत याफ़्ता हैं।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِندَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (19)

१९. क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना और मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के बराबर कर दिया है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाये और अल्लाह की राह में जिहाद किया, यह अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं[1] और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को रास्ता नहीं दिखाता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِندَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ (20)

२०. जो लोग ईमान लाये, हिजरत की, अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, वह अल्लाह के सामने बहुत ज़्यादा दर्जे वाले हैं, और यही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ (21)

२१. उनका रब उन्हें अपनी रहमत और ख़ुशी और ऐसी जन्नतों की ख़ुशख़बरी देता है जिन में उन के लिये दायमी सुख है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ (22)

२२. वहाँ ये हमेशा रहेंगे अल्लाह के पास, बेशक बहुत बड़े बदले हैं।[2]

---

[1] मूर्तिपूजक हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम की देख भाल करने का जो काम करते थे उस पर उन्हें बड़ा घमंड था, और इसके मुक़ाबले में वे ईमान और जिहाद को कोई फ़ज़ीलत नहीं देते थे, जिसकी फ़ज़ीलत मुसलमानों में थी। अल्लाह ने फ़रमाया : क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम का प्रबन्ध करने को अल्लाह पर ईमान और अल्लाह की राह में जिहाद के बराबर समझते हो ? याद रखो, अल्लाह के क़रीब ये बराबर नहीं हैं, बल्कि मूर्तिपूजक का कोई भी अमल क़ुबूल नहीं, चाहे वह सवाब के तौर पर ही हो।

[2] इन आयतों में उन ईमानवालों की प्रधानता (फ़ज़ीलत) की चर्चा की गयी है जिन्होंने हिजरत किया और अपने तन-मन-धन से जिहाद में हिस्सा लिया। फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ उन्हीं का पद अच्छा है और वही सफल हैं, यह अल्लाह की रहमत और रज़ा और दायमी इंआम के पात्र हैं, न कि वे जो ख़ुद अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हैं और अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों को ही अल्लाह पर ईमान के मुक़ाबले में प्यारा रखते हैं।

२३. हे ईमानवालो! अपने पिताओं और अपने भाईयों को दोस्त न बनाओ अगर वह कुफ़्र को ईमान से ज़्यादा अच्छा समझें, तुम में से जो भी उनसे प्रेम रखेगा वह पूरी तरह (गुनाहगार और) ज़ालिम है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوٓا ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوَٰنَكُمْ
أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّوا ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن
يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿23﴾

२४. आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया धन और वह तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो, और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो (अगर) यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से ज़्यादा प्यारा हैं, तो तुम इंतेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए, अल्लाह तआला फ़ासिकों को रास्ता नहीं दिखाता है।

قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ
وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا
وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ
أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ
فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ
وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿24﴾

२५. बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हें बहुत से मैदाने जंग में फ़त्ह अता की है, और हुनैन[1] की लड़ाई के दिन भी, जबकि तुम्हें अपनी ज़्यादा तादाद पर घमन्ड था, लेकिन इसने तुम्हें कोई फ़ायेदा नहीं दिया, लेकिन धरती अपनी विस्तार (वुसअत) के बावजूद भी तुम्हारे लिए तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर मुड़ गये।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ ٱللَّهُ فِى مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ
ٱلْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ ﴿25﴾

२६. फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से सलामती अपने नबी पर और ईमानवालों पर उतारी और अपनी वह सेना भेजी, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे और काफ़िरों को पूरा अज़ाब दिया, और इन काफ़िरों का यही बदला था।

ثُمَّ أَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَعَلَى
ٱلْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿26﴾

२७. फिर उस के बाद भी जिसे चाहे अल्लाह (तआला) माफ़ करे, अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

ثُمَّ يَتُوبُ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن
يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿27﴾

[1] हुनैन मक्का और तायफ़ नगरों के बीच एक घाटी का नाम है, यहाँ हवाज़िन और सक़ीफ़ के दो क़बीले रहते थे, जो अपनी तीरअंदाज़ी में मशहूर थे, यह मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ने की तैयारी कर रहे थे कि इसकी ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ को मिली तो आप ﷺ बारह हज़ार मुसलमानों की सेना लेकर इन क़बीलों से जंग करने के लिए हुनैन की घाटी में गये, यह फ़त्ह मक्का के १८ या १९ दिन के बाद शव्वाल की घटना (वाक़ेआ) है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّمَا ٱلْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ ٱلْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦٓ إِن شَآءَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (28)

२८. हे ईमानवालो! बेशक मूर्तिपूजक नापाक हैं,[1] वह इस साल के बाद मस्जिदे हराम के क़रीब भी न आने पायें,[2] अगर तुम्हें ग़रीबी का डर है, तो अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से धनवान बना देगा अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ ٱلْحَقِّ مِنَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ حَتَّىٰ يُعْطُوا۟ ٱلْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَٰغِرُونَ (29)

२९. उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, जो अल्लाह और उस के रसूल के ज़रिये हराम की गई चीज़ को हराम नहीं समझते, न सच्चे दीन को क़ुबूल करते हैं उन लोगों में से जिन्हें किताब अता की गयी है, यहाँ तक कि वह ज़लील होकर अपने हाथों से जिज़िया (टैक्स) अदा करें।[3]

وَقَالَتِ ٱلْيَهُودُ عُزَيْرٌ ٱبْنُ ٱللَّهِ وَقَالَتِ ٱلنَّصَٰرَى ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ ٱللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَٰهِهِمْ ۖ يُضَٰهِـُٔونَ قَوْلَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَبْلُ ۚ قَٰتَلَهُمُ ٱللَّهُ ۚ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ (30)

३०. यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है, और इसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है, यह क़ौल सिर्फ़ उनके मुँह की बात है, पहले के काफ़िरों के क़ौल की यह भी बराबरी करने लगे हैं, अल्लाह इनका नाश करे यह कहाँ फिरे जा रहे हैं?

ٱتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَٱلْمَسِيحَ ٱبْنَ مَرْيَمَ وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوٓا۟ إِلَٰهًا وَٰحِدًا ۖ لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ عَمَّا يُشْرِكُونَ (31)

३१. उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने आलिमों और धर्माचारियों (दरवेशों) को रब बनाया है,[4] और मरियम के बेटे मसीह को, अगरचे कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की इबादत का हुक्म दिया गया था, जिसके सिवाय

[1] मूर्तिपूजकों के नापाक और अशुद्ध (नजिस) होने का मतलब अक़ीदा, ईमान और अमलों की नापाकी है, कुछ के क़रीब मूर्तिपूजक बाहरी और अन्दरी दोनों तरह से नापाक हैं, क्योंकि वे शौच (सफ़ाई, और पाकीज़गी) का इस तरह प्रबन्ध नहीं करते, जिसका हुक्म धार्मिक नियमों ने दिया है।

[2] यह वही हुक्म है जो ९ हिजरी में मुक्ति (बराअत) का एलान के वक़्त किया गया था, जिसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है।

[3] मुश्रिकों से लड़ने के हुक्म के बाद यहूदियों और इसाईयों से लड़ने का हुक्म दिया जा रहा है, (अगर वे इस्लाम दीन क़ुबूल न करें) या फिर जिज़िया दे कर मुसलमानों की पनाह में रहना क़ुबूल कर लें। सुरक्षा कर को "जिज़िया" कहते हैं, यह उन के लिए है जो ग़ैर मुस्लिम हैं, लेकिन इस्लामी राज्य में रह रहे हों।

[4] इसकी तफ़सीर हज़रत अदी पुत्र हातिम के ज़रिये बयान हदीस से वाज़ेह है।

कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह उन के शिर्क करने से पाक है।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿32﴾

३२. वह अल्लाह के नूर को अपने मुखों से बुझा देना चाहते हैं, और अल्लाह इंकार करता है, लेकिन यह कि अपने नूर को पूरा करे, अगरचे काफ़िर लोग नाखुश हों।[1]

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿33﴾

३३. उसी ने अपने रसूल को सच्चा रास्ता और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे दूसरे सभी दीनों पर ग़ालिब कर दे,[2] अगरचे मुश्रिक बुरा मानें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ

३४. हे ईमानवालो! ज्यादातर उलमा और इबादत करने वाले लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और जो लोग सोने चांदी का ख़जाना रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते उन्हें सख़्त अजाब की ख़बर सुना दो।[3]

---

[1] यानी अल्लाह ने रसूल ﷺ को जो नूर और सच्चा दीन दे कर भेजा है, यहूदी, इसाई और मूर्तिपूजक चाहते हैं कि उसे झगड़े और लांछन से मिटा दें, तो उनकी मिसाल उस जैसी है जो अपनी फूंक से सूरज की किरण और चांद की रौशनी को बुझाने की कोशिश करे, तो जिस तरह यह नामुमकिन है उसी तरह जो सच्चा दीन अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को देकर भेजा है उसको मिटाना भी नामुमकिन है, वह सभी दीनों पर ग़ालिब होकर रहेगा। जैसाकि अगली आयत में अल्लाह ने फ़रमाया : काफ़िर का लफ़्ज़ी माने है छिपाने वाला, इसी वजह से रात को भी काफ़िर कहते हैं, क्योंकि वह सभी चीज़ों को अपने अंधेरे में छिपा लेती है, किसान को भी काफ़िर कहते हैं, क्योंकि वह अनाज के दाने को धरती में छिपा देता है, इसलिए काफ़िर भी अल्लाह के नूर को छिपाना चाहते हैं या अपने दिलों में कुफ्र, साजिश और मुसलमानों और इस्लाम के ख़िलाफ़ हसद और जलन को छिपाये हुए हैं, इसलिए उन्हें काफ़िर कहा जाता है।

[2] दलील और निशानी की बुनियाद पर यह ग़लबा हर वक़्त हासिल है, लेकिन जब मुसलमानों ने दीन के हुक्म पर अमल किया तो उन्हें दुनियावी ग़लबा हासिल हुआ, और अब भी मुसलमान अपने दीन के ऐतबार से काम करने लगें तो उनका असर ज़रूर मुमकिन है, इसलिए कि अल्लाह का वादा है कि अल्लाह के मानने वाले ही ग़ालिब और कामयाब होंगे, शर्त यह है कि मुसलमान अल्लाह वाले बन जायें।

[3] हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यह ज़कात के हुक्म से पहले का हुक्म है, ज़कात

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿34﴾

३५. जिस दिन उस ख़जाना को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथे और पहलू और पीठें दागी जायेंगी (उन से कहा जायेगा) यह है जिसे तुम ने अपने लिए ख़ज़ाना बना कर रखा था, तो अपने ख़ज़ानों का मजा चखो।

يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿35﴾

३६. महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाशों और धरती को उस ने पैदा किया है, उन में से चार हुरमत और इज़्ज़त के हैं[1] यही पाक दीन है,[2] तुम इन महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो, और तुम सभी मुश्रिकों से जिहाद करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं, और जान रखो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿36﴾

३७. महीनों का आगे पीछे कर देना कुफ़्र को ज़्यादा करना है,[3] उससे वह गुमराह किये जाते

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ

के हुक्म के बाद ज़कात द्वारा लोगों के माल की पकीज़गी का ज़रिया बताया है, इसलिए आलिमों का कहना है कि जिस माल से ज़कात अदा कर दी जाये वह ख़ज़ाना नहीं है और जिस से ज़कात न दी जाये वह ख़ज़ाना है, जिस पर क़ुरआन की यह तंबीह आयी है।

[1] فِي كِتَابِ الله से मुराद 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है।

[2] यानी उन महीनों का उसी नम्बर में होना जो अल्लाह ने रखा है, और जिन में चार हुरमत वाले हैं, यही हिसाब सही और गिनती पूरी है।

[3] نَسِيء (नसीउन) मतलब 'पीछे करने के' हैं, अरबों में भी हुरमत वाले महीनों में लूटमार, ख़ून-ख़राबा और लड़ाई को अच्छा नहीं समझा जाता था, परन्तु लगातार महीनों की हुरमत करना ख़ून-ख़राबा से रुके रहना उनके लिए कठिन था, इसलिए उसका हल उन्होंने यह निकाल रखा था कि जिस हुरमत वाले महीने में वे ख़ून-ख़राबा करना चाहते वह कर लेते, और यह एलान कर देते कि इस हुरमत वाले महीने के बदले फ़्लां महीना हुरमत वाला होगा, जैसे मोहर्रम के महीने की हुरमत ख़त्म करके सफ़र के महीने को हुरमत वाला एलान कर देते, इस तरह हुरमत वाले महीनों में बदलाव और हेर-फेर को ज़्यादा कर लिया करते थे, इसको 'नसी' कहा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿37﴾

हैं जो काफ़िर हैं, एक साल को हलाल कर लेते हैं, और एक साल को हराम बना लेते हैं कि अल्लाह ने जो हराम रखा है उसकी गिनती में तो बराबरी कर लें, फिर जिसे हराम किया है उसे हलाल बना लें, उन के बुरे काम उन्हें अच्छे दिखा दिये गये हैं और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿38﴾

३८. हे ईमानवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाता है कि चलो अल्लाह के रास्ते में हिजरत करो तो तुम धरती पकड़ लेते हो, क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर ही रीझ गये हो, सुनो! दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत छोटी है।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿39﴾

३९. अगर तुम ने हिजरत न की तो अल्लाह (तआला) तुम्हें दुखदायी सज़ा देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को बदल लायेगा, तुम अल्लाह (तआला) को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते,[1] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

जाता था, अल्लाह तआला ने उसके बारे में फ़रमाया कि यह अधर्म (कुफ़्र) का ज़्यादा करना है, क्योंकि इस अदल-बदल से मक़सद लड़ाई-झगड़ा, ख़ून-ख़राबा और दुनियावी फ़ायेदा के अलावा कुछ भी नहीं।

[1] रोम के इसाई राजा हरक़ूलिस के बारे में यह ख़बर मिली कि वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की तैयारी कर रहा है, इसलिए नबी ﷺ ने भी इसके लिए तैयारी का हुक्म दे दिया, यह श्व्वाल ९ हिजरी का वाक़ेआ है, सख़्त गर्मी थी और लम्बा सफ़र था, कुछ मुसलमानों और मुश्रिकों को यह हुक्म भारी लगा जिसका बयान इस आयत में किया गया है, और उन्हें बाख़बर और होशियार किया गया है, यह तबूक की जंग कहलाती है, जो हक़ीक़त में नहीं हुई। २० दिन मुसलमान सीरिया के क़रीब तबूक के मुक़ाम पर इंतेज़ार करके वापस आ गये, इसको कठिनाईयों की जंग कहा जाता है, क्योंकि इस लम्बे सफ़र में इस सेना को ज़्यादा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। اثاقلتم यानी सुस्ती करने और पीछे रहना चाहते हो, इसका प्रदर्शन (मुज़ाहरा) कुछ लोगों की तरफ़ से हुआ, लेकिन इसको सम्बोधित (मुख़ातब) सभी से कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿40﴾

४०. अगर तुम उस (रसूल मुहम्मद ﷺ) की मदद न करो तो अल्लाह ही ने उसकी मदद की, उस वक़्त जब काफ़िरों ने उसे (देश से) निकाल दिया था, दो में से दूसरा जबकि वह दोनों गुफ़ा में थे, जब यह अपने साथी से कह रहे थे कि फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है,[1] तब अल्लाह ही ने अपनी तरफ़ से सुकून उतारकर उन सेनाओं से उसकी मदद की जिन्हें तुम ने देखा भी नहीं, उस ने काफ़िरों की बात नीची कर दी और बड़ा और बेहतर तो अल्लाह का ही कौल है,[2] अल्लाह (तआला) ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿41﴾

४१. निकल खड़े हो जाओ हल्के-फुल्के हो तो भी और भारी-भरकम हो तो भी,[3] और अल्लाह के रास्ते में अपने तन-मन-धन से जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम में इल्म हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿42﴾

४२. अगर जल्द हासिल होने वाली धन-सामग्री होती[4] और हल्का-सा सफ़र होता तो ये ज़रूर आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन पर तो दूरी और दूरी की तकलीफ़ पड़ गई। और अब तो ये अल्लाह की क़सम खायेंगे कि अगर हम में

---

[1] जिहाद से पीछे रहने वालों या उससे जान छुड़ाने वालों से कहा जा रहा है कि अगर तुम मदद नहीं करते हो तो अल्लाह को तुम्हारी मदद की ज़रूरत भी नहीं है, अल्लाह तआला ने अपने रसूलों की उस वक़्त भी मदद की जब उस ने गुफ़ा में पनाह ली थी और अपने साथी (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़) से कहा था, "फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है।" इसकी मुफ़स्सल हदीस आती है।

[2] काफ़िरों के क़ौल से शिर्क और अल्लाह के क़ौल से तौहीद (एकेश्वरवाद) का मतलब है।

[3] इस के कई मतलब बयान कये जाते हैं, व्यक्तिगत (ज़ाती) तौर से या सामूहिक तौर से, ख़ुशी से या नाखुशी से, ग़रीब हो या अमीर हो, जवान हो या बूढ़ा हो, पैदल हो या सवार हो, विवाहित हो या अविवाहित हो, वह हिजरत करने वालों में से हो या रह जाने वालों में।

[4] यहाँ से उन लोगों का बयान हो रहा है जिन्होंने उज़्र बता कर नबी ﷺ से इजाज़त ले लिया था, जब कि हक़ीक़त में उन के पास कोई उज़्र नहीं था, عَرَض से मुराद जो दुनियावी फ़ायदे सामने आयें, मतलब है जंग में मिली ग़नीमत।

ताक़त और क़ूवत होती तो हम ज़रूर आप के साथ निकलते, यह अपनी जानों को ख़ुद ही तबाही की ओर डाल रहे हैं, इन के झूठे होने का सच्चा इल्म अल्लाह को है।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿43﴾

४३. अल्लाह तुझे माफ़ कर दे, तूने उन्हें क्यों इजाज़त दे दिया, बिना इस के कि तेरे सामने सच्चे लोग वाज़ेह तौर से ज़ाहिर हो जायें और तू झूठे लोगों को भी जान ले।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿44﴾

४४. अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान और यक़ीन रखने वाले तो माल से और जान से जिहाद करने से रूके रहने की कभी भी तुझ से इजाज़त नहीं माँगेंगे और अल्लाह तआला परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿45﴾

४५. यह इजाज़त तो तुझ से वही माँगते हैं, जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है न आख़िरत के दिन पर यक़ीन है, जिन के दिल शक में पड़े हुए है और यह अपने शक ही में भटक रहे हैं।[1]

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿46﴾

४६. अगर उनका इरादा (जिहाद पर) निकलने का होता, तो वह इस (सफ़र) के लिए संसाधन (वसायेल) की तैयारी करते, लेकिन अल्लाह को उनका उठना प्यारा नहीं था, इसलिए उन्हें कुछ करने से रोक दिया, और कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَا۟اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿47﴾

४७. अगर यह तुम में मिल कर निकलते भी तो तुम्हारे लिए फ़ित्ना के अलावा दूसरी कोई चीज़ न बढ़ाते, बल्कि तुम्हारे बीच ख़ूब घोड़े दौड़ाते, और तुम में इख़्तिलाफ़ डालने की खोज

---

[1] यह उन मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) का बयान है, जिन्होंने झूठे बहाने बना कर रसूल करीम ﷺ से जिहाद में हिस्सा न लेने का हुक्म ले लिया था, उन के बारे में कहा गया है कि ये अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते। इसका मतलब यह है कि इस ईमान की कमी ने उनको जिहाद में हिस्सा न लेने पर मजबूर किया है, अगर ईमान इन के दिलों में मज़बूत होता तो न तो यह जिहाद से भागते और न इनको शको शुब्हा ने घेरा होता।

में रहते, उन के मानने वाले ख़ुद तुम में मौजूद हैं,[1] और अल्लाह तआला ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿48﴾

४८. ये तो इस से पहले भी इख़्तिलाफ़ पैदा करने की खोज में रहे हैं, और तेरे लिए कामों को उलट-पुलट करते रहे हैं, यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो गया, इस के बावजूद कि वे नाख़ुशी में ही रहे।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿49﴾

४९. उनमें से कोई तो कहता है कि मुझे हुक्म दे दीजिए मुझे परेशानी में न डालिए, बाख़बर रहो कि वह तो फ़ित्ना में पड़ चुके हैं और बेशक नरक काफ़िरों को घेर लेने वाली है।[2]

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿50﴾

५०. आप को अगर कोई भलाई हासिल हो जाये तो उन्हें बुरा लगता है और कोई बुराई पहुँच जाये तो कहते हैं, हम ने तो अपनी बात पहले ही से ठीक कर ली थी, फिर तो बड़े इतराते हुए लौटते हैं।[3]

[1] इस से मालूम होता है कि मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के लिए ख़ुफ़िया काम करने वाले कुछ लोग मुसलमानों के साथ सेना में मौजूद थे, जो मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) को मुसलमानों की ख़बरें पहुँचाया करते थे।

[2] "मुझे फ़ित्ने (भेद) में न डालिए।" इसका एक मतलब तो यह होगा अगर आप मुझे इजाज़त नहीं देंगे तो मुझे बिना इजाज़त रुकने पर ज़्यादा गुनाह होगा, इस बिना पर फ़ित्ना 'गुनाह' के मतलब में होगा, यानी मुझे गुनाह में न डालिए। दूसरा मतलब फ़ित्ना का तबाही है, यानी मुझे साथ ले जाकर तबाही में न डालिए। कहा जाता है कि जद्द बिन क़ैस ने निवेदन किया कि मुझे साथ न ले जायें, रोम की औरतों को देख कर मैं सब्र न रख सकूंगा, इस पर नबी ﷺ ने मुँह फेर लिया और इजाजत दे दिया, उस के बाद आयत उतरी, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "फ़ित्ना में तो वह पड़ चुके हैं" यानी जिहाद में पीछे रहना और उससे जान चुराना, ख़ुद एक फ़ित्ना और बहुत बड़ा गुनाह है, जिस में ये शामिल हैं और मरने के बाद नरक की आग उनको घेर लेने वाली है, जिससे भागने का कोई रास्ता उनके लिए न होगा।

[3] आगे-पीछे के कलाम की बिना पर حسنة से यहाँ कामयाबी और फ़ायेदा और سيئة से नाकामी, हार और इसी तरह का नुक़सान जो लड़ाई में होता है, मुराद है इस में उन के अन्दरूनी बुराईयों का प्रदर्शन (इज़हार) है जो मुनाफ़िक़ों (भ्रष्टाचारियों) के दिलों में था, इसलिए कि दुख पर ख़ुश होना और भलाई हासिल होने पर दुख और तकलीफ़ का एहसास करना दुश्मनी के सबबों को ज़ाहिर करता है।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿51﴾

५१. (आप) कह दीजिए कि हमें सिवाय अल्लाह के हमारे हक़ में लिखे हुए के कोई चीज पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा मालिक है, और (आप कह दीजिए) ईमानवालों को अल्लाह ही पर पूरा भरोसा करना चाहिए।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ڮ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿52﴾

५२. कह दीजिये कि तुम हमारे बारे में जिस के इंतेज़ार में हो, वह दो भलाईयों में से एक है, और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के इंतेज़ार में हैं कि या तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अपने पास से कोई सज़ा दे या हमारे हाथों से, बस एक तरफ़ तुम इंतेज़ार करो, दूसरी तरफ़ हम तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहे हैं।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿53﴾

५३. कह दीजिए कि तुम खुशी या नाखुशी किसी तरह भी ख़र्च करो, क़ुबूल तो कभी नहीं किया जायेगा,[1] बेशक तुम फ़ासिक़ लोग हो।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿54﴾

५४. कोई सबब उन के ख़र्च को क़ुबूल न होने का इस के सिवाय नहीं कि ये अल्लाह और उस के रसूल के नाफ़रमान हैं और बड़ी सुस्ती से नमाज़ में आते हैं और बुरे दिल से ख़र्च करते हैं।

---

[1] انفقوا हुक्म है, लेकिन यहाँ इस कलिमा का मतलब यह है कि अगर तुम ख़र्च करोगे तो क़ुबूल नहीं किया जायेगा, या यह ख़बर देने वाले कलिमा के मतलब में है, मतलब यह है कि दोनों बातें एक तरह हैं, ख़र्च करो या न करो, अपनी मर्ज़ी से अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे तो भी नाक़ुबूल है, क्योंकि क़ुबूल करने की पहली शर्त ईमान है और वही तुम्हारे अन्दर नहीं है, और नाखुशी से ख़र्च किया हुआ माल अल्लाह के यहाँ वैसे ही ठुकराया हुआ है, क्योंकि वहाँ जायेज मक़सद नहीं मौजूद है जो क़ुबूल करने के लिए ज़रूरी है, यह आयत भी इसी तरह है जिस तरह यह है।

﴿اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ﴾

"आप इन के लिए माफ़ी माँगें या न माँगें।" (सूर: अत्तौब:-८०)

यानी दोनों बातें एक तरह हैं।

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿55﴾

५५. इसलिए आप को उन के माल और औलाद तअज्जुब में न डाल दें, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें दुनिया की जिन्दगी में ही सजा दे[1] और उनके कुफ्र की ही हालत में उनकी जान निकल जायें ।[2]

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿56﴾

५६. और ये अल्लाह की क़सम खा-खा कर कहते हैं कि ये तुम्हारे गुट के लोग हैं, अगरचे कि वे हक़ीक़त में तुम्हारे नहीं, बात केवल इतनी है कि ये बुज़दिल लोग हैं ।

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَـًٔا أَوْ مَغَٰرَٰتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿57﴾

५७. अगर ये कोई महफ़ूज़ मकाम या कोई गुफ़ा या कोई भी सिर छिपाने की जगह पा लें तो अभी उस तरफ़ लगाम तोड़ कर उल्टे भाग छूटें ।

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَٰتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿58﴾

५८. उन में वे भी हैं जो सदक़ा के माल के बंटवारे के बारे में आप पर इल्जाम रखते हैं, अगर उस में से उनको मिल जाये तो ख़ुश हैं और अगर उस में से न मिला तो फ़ौरन ही बिगड़ खड़े होते हैं ।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَآ ءَاتَىٰهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَرَسُولُهُۥٓ إِنَّآ إِلَى اللَّهِ رَٰغِبُونَ ﴿59﴾

५९. अगर ये लोग अल्लाह और उस के रसूल के दिये हुए पर ख़ुश रहते और कह देते कि अल्लाह हमें काफ़ी है, अल्लाह हमें अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही से उम्मीद रखने वाले हैं ।

إِنَّمَا الصَّدَقَٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسَٰكِينِ وَالْعَٰمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ

६०. सदक़ा केवल फ़क़ीरों के लिए हैं और ग़रीबों के लिए और उन के काम करने वालों

---

[1] इमाम इब्ने कसीर और इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस से ज़कात और अल्लाह की राह में सदक़ा करना मुराद निकाला है, यानी इन मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) से ज़कात और सदक़ा तो (जो वह मुसलमान ज़ाहिर करने के लिए देते हैं) दुनिया में क़ुबूल किये जायें ताकि इस तरह से उन्हें दुनिया में धन की मार भी दी जाये ।

[2] आख़िर में उनकी मौत कुफ़्र की हालत में होगी, इसलिए कि वे अल्लाह के पैग़म्बर को सच्चे दिल से क़ुबूल करने को तैयार ही नहीं और अपने कुफ़्र और मुनाफ़क़त पर ही अडिग (क़ायम) और मज़बूत हैं ।

وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿60﴾

के लिए, और उनके लिए जिन के दिल परचाये जा रहे हों और गुलाम आजाद करने और कर्जदार लोगों के लिए, और अल्लाह की राह में और मुसाफिरों के लिए[1] फ़र्ज है अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ

६१. और उन में से वे भी हैं जो पैग़म्बर (संदेशवाहक) को तकलीफ़ देते हैं और कहते हैं कि हल्के कान का है, (आप) कह दीजिए कि वह कान तुम्हारी भलाई के लिए है[2] वह

---

[1] इन आठ लोगों पर ख़र्च करने का मुख़्तसर बयान इस तरह है। (१,२) भिखारी और गरीब लगभग क़रीब ही क़रीब है और एक माने दूसरे से मिलता-जुलता है, यानी गरीब को भिखारी और भिखारी को गरीब कह ही लिया जाता है। (३) काम करने वालों से मुराद सरकारी कर्मचारी हैं जो ज़कात व सदक़ा की राशि वसूल करते हैं और बाँटते हैं, और उसका लेखा-जोखा रखते हैं। (४) आकर्षित हृदय (मुअल्लफ़ा कुलूब) एक तो वह काफ़िर हैं जो थोड़ा-थोड़ा इस्लाम की तरफ़ आकर्षित होते हों और उनकी मदद करने पर यह उम्मीद हो कि वह मुसलमान हो जायेंगे। दूसरे नये मुसलमान हैं जिनको इस्लाम पर मज़बूती से क़ायम रहने के लिए मदद की ज़रूरत हो। तीसरे वे लोग भी हैं जिनकी मदद करने से यह उम्मीद हो कि वह अपने इलाक़े के लोगों को मुसलमानों पर हमला करने से रोकेंगे और इस तरह वह क़रीबी कमज़ोर मुसलमानों की हिफ़ाज़त करेंगे, यह और इस तरह की दूसरी हालतें दिल खींचने करने की हैं, जिन पर ज़कात की राशि ख़र्च की जा सकती है, चाहे बयान किये लोग धनवान ही हों, कुछ लोगों के अनुसार यह इस्तेमाल ख़त्म हो गया है, लेकिन यह बात ठीक नहीं है, हालात और वक़्त के अनुसार हर ज़माने में इस मद पर ज़कात की राशि ख़र्च करना जायेज़ है। (५) गर्दनें आज़ाद कराने के लिए। (६) क़र्ज़दार से एक तो वह क़र्ज़दार मुराद हैं जो अपने परिवार को ज़िन्दगी गुज़ारने और ज़िन्दगी की ज़रूरत को पूरा करते-करते दूसरे लोगों के क़र्ज से दब गये हों, और उन के पास नगद राशि भी नहीं है और ऐसा सामान भी नहीं है जिसे बेचकर वे उस क़र्ज को चुका सकें। दूसरे वे ज़िम्मेदार लोग जिन्होंने किसी दूसरों की ज़मानत दी हो और फिर वह उसकी अदायगी के ज़िम्मेदार बना दिये गये हों, या इन सभी लोगों को ज़कात की राशि से मदद करना जायेज़ है। (७) अल्लाह की राह से मुराद जिहाद है, यानी लड़ाई का सामान और ज़रूरतों और मुजाहिद (चाहे वह मालदार ही हो) पर ज़कात की राशि ख़र्च करनी जाएज़ है। इसी तरह कुछ आलिमों के नज़दीक तबलीग़ (निमन्त्रण) और दावत भी अल्लाह की राह में शामिल है, क्योंकि इसका भी मक़सद अल्लाह के क़ौल को हर इंसान तक पहुँचाना है। (८) रास्ते के लोगों से मुराद मुसाफ़िर हैं, यानी कोई भी इंसान सफ़र के वक़्त मदद का पात्र (मुस्तहिक़) हो गया हो तो चाहे वह अपने देश में धनवान ही हो, उसकी मदद ज़कात की राशि से की जा सकती है।

[2] यहाँ से फिर मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) की चर्चा हो रही है। नबी ﷺ के ख़िलाफ़ एक इल्ज़ाम यह उन्होंने लगाया कि यह कान का कच्चा (या हल्का) है, मतलब यह है कि यह हर इंसान की बात सुन लेता है (यानी यह आप ﷺ के इल्म, फ़ज़्ल और माफ़ करने के गुणों से उन्हें धोखा

وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ ۚ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿61﴾

अल्लाह पर ईमान रखता है और मुसलमानों की बातों का यक़ीन करता है, और तुम में से जो ईमानवाले हैं यह उन के लिए रहमत है, और रसूलुल्लाह (अल्लाह के रसूल) को जो लोग तकलीफ़ देते हैं उनके लिए दुखदायी अज़ाब है।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَن يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿62﴾

६२. वे सिर्फ़ तुम्हें ख़ुश करने के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खा जाते हैं, हालांकि अगर यह ईमानदार होते तो अल्लाह और उस के रसूल ख़ुश किये जाने के ज़्यादा हक़दार थे।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿63﴾

६३. क्या ये नहीं जानते कि जो भी अल्लाह का और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करेगा उस के लिए बेशक नरक की आग है, जिस में वे हमेशा रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ा अपमान है।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَن تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُم بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ﴿64﴾

६४. मुनाफ़िक़ों को (हर वक़्त) यह डर लगा रहता है कि कहीं उन (मुसलमानों) पर कोई आयत न उतरे, जो उन के दिलों की बातें उन्हें बता दे। कह दीजिए कि तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआला उसे ज़ाहिर करने वाला है जिस से तुम डरे हुए हो।

وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿65﴾

६५. अगर आप उन से पूछें तो साफ़ कह देंगे कि हम तो यूं ही आपस में हँस-बोल रहे थे। कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी आयतें और उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी-मज़ाक़ के लिए बाक़ी रह गये हैं?[1]

हुआ)। अल्लाह ने फ़रमाया कि नहीं, हमारा पैग़म्बर फ़ितना और फ़साद की कोई बात नहीं सुनता, जो भी सुनता है तुम्हारा उस में हित, नेकी और भलाई है।

[1] मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाते थे, ईमानवालों का अपमान करते, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में बुरी बात का इस्तेमाल करने में परहेज़ न करते, जिसकी ख़बर किसी तरह से ईमानवालों और रसूलुल्लाह ﷺ को हो जाती थी, लेकिन अगर उन से पूछा जाता तो साफ़ मुकर जाते और कहते कि हम तो आपस में इसी तरह हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "हंसी-मज़ाक़ के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह और उसकी आयतें और उसका रसूल ही रह गया है?" मतलब यह कि अगर तम्हारा मक़सद आपस में हंसी-मज़ाक़ का होता तो उस में अल्लाह, उसकी आयतें और रसूल बीच में क्यों आते? ये बेशक उस हसद और जलन का इशारा है जो अल्लाह की आयतों और हमारे पैग़म्बर के

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿66﴾

६६. तुम बहाने न बनाओ, बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये, अगर हम तुम में से कुछ लोगों से अनदेखी भी कर लें तो कुछ लोगों को उनके ज़ुल्म की सख़्त सज़ा भी देंगे।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿67﴾

६७. सभी मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) मर्द और औरत आपस में एक ही हैं,[1] ये बुरी बातों का हुक्म देते हैं और भली बातों से रोकते हैं और अपनी मुठ्ठी बन्द रखते हैं। ये अल्लाह को भूल गये, अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) ही फ़ासिक़ हैं।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿68﴾

६८. अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ मर्दों-औरतों और काफ़िरों से नरक की आग का वादा कर चुका है, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए बस है, उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए दायमी अज़ाब है।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿69﴾

६९. तुम से पहले के लोगों की तरह जो तुम से बहादुर और माल-दौलत और औलाद में ज़्यादा थे तो वह अपना धार्मिक भाग बरत गये, फिर तुम ने भी अपना भाग बरत लिया[2] जैसे तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदेमंद हुये थे और तुम ने भी उसी तरह मज़ाक़ वाला गप किया जैसे उन्होंने किया था, उनके काम दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये और यही लोग घाटे में हैं।

ख़िलाफ़ तुम्हारे दिलों में मौजूद है।

[1] मुनाफ़िक़ जो क़सम खाकर मुसलमानों को यक़ीन दिलाया करते थे कि "हम तुम ही में से हैं" अल्लाह तआला ने इसका खण्डन (तरदीद) किया कि ईमानवालों से उनका क्या मतलब? लेकिन यह सभी मुनाफ़िक़ चाहे मर्द हों या औरत एक ही हैं, यानी कुफ़्र और भ्रष्टाचार में एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं, आगे उनकी बुराईयों को बयान किया जा रहा है जो ईमानवालों के गुणों (सिफ़तों) के ठीक उल्टा और ख़िलाफ़ हैं।

[2] خلاق का दूसरा तर्जुमा दुनियावी हिस्सा भी किया गया है, यानी तुम्हारे हिस्सा में दुनिया का जितना हिस्सा लिख दिया गया है उसे बरत लो, जिस तरह से तुम से पहले के लोगों ने अपना हिस्सा बरता और फिर मरने या अज़ाब से हमकिनार हो गये।

७०. क्या उन्हें अपने से पहले के लोगों की ख़बर नही पहुँची, नूह और आद और समूद के क़ौम और इब्राहीम की क़ौम और मदयन के रहने वाले और उलट-पुलट कर दी गयी बस्तियों के लोगों की,[1] उन के पास रसूल (ईशदूत) दलीलें लेकर पहुँचे तो अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करे, बल्कि उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ ۚ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ (70)

७१. मुसलमान मर्द और औरत एक-दूसरे के (मददगार और) मित्र हैं, वे भलाईयों का हुक्म देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, नमाज़ें पाबंदी से पढ़ते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह और उस के रसूल की बात मानते हैं,[2] यही लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) जल्द ही रहमत करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (71)

७२. इन ईमानदार मर्दों और औरतों से अल्लाह (तआला) ने उन जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रहीं हैं, जहाँ वे हमेशा रहने वाले हैं और उन पाकीज़ा घर का, जो उन ख़त्म न होने वाले जन्नत में हैं, और अल्लाह की ख़ुशी सब से महान है, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (72)

---

[1] यहाँ उन छः क़ौमों का ज़िक्र किया गया है जिनका स्थान सीरिया देश रहा है, यह अरब क्षेत्र के क़रीब है और उनकी कुछ बातें शायद उन्होंने अपने पूर्वजों से सुनी भी हों। नूह की क़ौम जो सैलाब में डुबो दी गई, आद की क़ौम जो ताक़त और क़ूवत में बेहतर होने के बावजूद, तेज हवाओं के झोंकों से बरबाद कर दी गई। समूद की क़ौम, जिसे आकाश की चीख़ ने बरबाद कर दिया। इब्राहीम की क़ौम जिसके राजा नमरूद बिन कनआन बिन कोश को मच्छर से मरवा दिया गया। मदयन के निवासी (हज़रत शुऐब की क़ौम) जिन्हें चीख़, भूकम्प और बादलों की छाया के अज़ाब से तबाह किया गया और उल्टे-पल्टे गये लोग, इससे मुराद लूत की क़ौम है, जिन की बस्ती का नाम «सदूम» था। انتكاف का मतलब है उलट-पलट देना, उन पर एक तो आकाश से पत्थर बरसाये गये, दूसरे उनकी बस्ती को ऊपर उठा कर नीचे फेंका गया, जिससे पूरी बस्ती ऊपर तले हो गयी, इस बिना पर उन उल्टे-पल्टे लोगों को «असहाब मुतफ़िक़ात» कहा जाता है।

[2] नमाज़ अल्लाह के हक़ों में बहुत बड़ी इबादत है और ज़कात दूसरे लोगों के हक़ के बिना पर ख़ास मक़ाम रखती है, इसी वजह से इन दोनों का ख़ास तौर से बयान करके कहा गया है कि वह हर बारे में अल्लाह और उस के रसूल के हुक्मों की पैरवी करते हैं।

७३. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करते रहो,[1] और उन पर कड़ाई करो, उनका असल जगह नरक है, जो बहुत बुरी जगह है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿73﴾

७४. ये अल्लाह की क़सम खा कर कहते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, अगरचे कि बेशक कुफ़्र का कलिमा इन के मुंह से निकल चुका है, और ये अपने इस्लाम के बावजूद भी काफ़िर हो गये हैं, और इन्होंने उस काम का इरादा भी किया है जिसे हासिल न कर सके, ये केवल इसी बात का बदला ले रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से और इस के रसूल ने धनवान कर दिया, अगर यह अब भी तौबा कर लें तो यह इन के हक़ में अच्छा है और अगर मुंह मोड़े रहें तो अल्लाह (तआला) उन्हें दुनिया व आख़िरत में दुखदायी सजा देगा, और पूरी धरती में उनका कोई वली और मददगार न खड़ा होगा।

يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ مَا قَالُوا۟ وَلَقَدْ قَالُوا۟ كَلِمَةَ ٱلْكُفْرِ وَكَفَرُوا۟ بَعْدَ إِسْلَٰمِهِمْ وَهَمُّوا۟ بِمَا لَمْ يَنَالُوا۟ ۚ وَمَا نَقَمُوٓا۟ إِلَّآ أَنْ أَغْنَىٰهُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ مِن فَضْلِهِۦ ۚ فَإِن يَتُوبُوا۟ يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۖ وَإِن يَتَوَلَّوْا۟ يُعَذِّبْهُمُ ٱللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿74﴾

७५. इन में वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से धन अता करेगा तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और पूरी तरह से नेक लोगों में हो जायेंगे।

وَمِنْهُم مَّنْ عَٰهَدَ ٱللَّهَ لَئِنْ ءَاتَىٰنَا مِن فَضْلِهِۦ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿75﴾

७६. लेकिन जब अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया तो यह उस में कंजूसी करने लगे और टाल-मटोल करके मुंह मोड़ लिया।[2]

فَلَمَّآ ءَاتَىٰهُم مِّن فَضْلِهِۦ بَخِلُوا۟ بِهِۦ وَتَوَلَّوا۟ وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿76﴾

७७. तो इस की सजा के तौर पर अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, अल्लाह से मिलने के दिनों तक, क्योंकि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वादे की मुख़ालफ़त की, और झूठ बोलते रहे।

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِى قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُۥ بِمَآ أَخْلَفُوا۟ ٱللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا۟ يَكْذِبُونَ ﴿77﴾

[1] इस आयत में नबी करीम ﷺ को काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद और उन पर कड़ाई करने का हुक्म दिया जा रहा है, नबी ﷺ के बाद इस से मुताअल्लिक़ आप ﷺ का पैरोकार है।

[2] इस आयत को कुछ मुफ़स्सिर एक सहाबी हज़रत साअलबा बिन हातिब अन्सारी के बारे में बताते हैं, लेकिन सुबूत की बुनियाद पर यह सही नही है, सही बात यह है कि इस में भी मुनाफ़िकों के एक दूसरे अमल का बयान किया गया है।

७८. क्या वे यह नहीं जानते कि अल्लाह (तआला) को उन के दिल का भेद (राज़) और उनकी कानाफूसी सब मालूम है और अल्लाह (तआला) सभी छिपी बातों का जानकार है?[1]

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ عَلَّٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿78﴾

७९. जो लोग उन मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाते हैं, जो दिल खोलकर सदक़ा करते हैं और उन लोगों पर जिन को अपनी मेहनत के सिवाय कुछ हासिल ही नहीं, तो ये उनका मज़ाक करते हैं, अल्लाह भी उन से मज़ाक करता है, और उन्हीं के लिए बहुत सख़्त अज़ाब है।

ٱلَّذِينَ يَلْمِزُونَ ٱلْمُطَّوِّعِينَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ فِى ٱلصَّدَقَٰتِ وَٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ ٱللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿79﴾

८०. आप इन के लिए तौबा करें या न करें, अगर आप सत्तर बार भी इन के लिए तौबा करें तो भी अल्लाह उन्हें कभी भी माफ़ नहीं करेगा[2] ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से कुफ़्र किया है[3] और ऐसे फ़ासिकों को अल्लाह हिदायत नहीं देता।

ٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿80﴾

८१. पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ अपने बैठे रह जाने पर ख़ुश हैं, उन्होंने अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद करना अप्रिय रखा और उन्होंने कह दिया कि इस गर्मी में न निकलो, कह दीजिए कि नरक की आग बहुत गरम है, काश कि वे समझते होते।

فَرِحَ ٱلْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَٰفَ رَسُولِ ٱللَّهِ وَكَرِهُوٓا۟ أَن يُجَٰهِدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَقَالُوا۟ لَا تَنفِرُوا۟ فِى ٱلْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَّوْ كَانُوا۟ يَفْقَهُونَ ﴿81﴾

---

[1] इस में उन मुनाफ़िकों के लिए कड़ी तंबीह है जो अल्लाह तआला से वादा करते हैं फिर उसकी फ़िक्र नहीं करते, जैसे कि वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनकी पोशीदा बातों और राज़ों को नहीं जानता, अगरचे कि अल्लाह सभी कुछ जानता है, क्योंकि वह तो गैब का जानने वाला है, सभी अप्रत्यक्ष (पोशीदा) बातों को जानता है।

[2] सत्तर की तादाद मुबालग़ा और ज़्यादती के लिए है कि चाहे जितना ज़्यादा उन की मग़फ़िरत के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको कभी भी माफ़ नहीं करेगा, यह मतलब नहीं कि अगर सत्तर से ज़्यादा बार दोष मुक्ति के लिए विनय की गयी तो उनको माफ़ कर दिया जायेगा।

[3] यह माफ़ी से महरूम करने का सबब बता दिया गया है, ताकि लोग किसी की सिफ़ारिश की उम्मीद में न रहें बल्कि ईमान और नेक कामों की दौलत लेकर अल्लाह के दरबार में हाज़िर हों, अगर क़यामत सामग्री (तोशा) किसी के पास नहीं होगा तो ऐसे काफ़िरों और नाफ़रमानों की कोई सिफ़ारिश भी नहीं करेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश का हुक्म ही अता नहीं करेगा।

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿82﴾

८२. अत: उन्हें चाहिए कि बहुत कम हँसें और ज़्यादा रोयें, बदले में उस के जो ये करते थे।

فَإِن رَّجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُل لَّن تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَن تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا ۖ إِنَّكُمْ رَضِيتُم بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿83﴾

८३. तो अगर अल्लाह तआला आप को उन के किसी गुट की तरफ़ लौटा कर वापस ले आये फिर ये आप से लड़ाई के मैदान में निकलने की आज्ञा माँगें, तो आप कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कभी भी नहीं चल सकते और न मेरे साथ दुश्मन से लड़ाई कर सकते हो, तुम ने पहली बार ही बैठे रहने को अच्छा समझा था, तो तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो।

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ﴿84﴾

८४. और इन में से कोई मर जाये तो उस के जनाज़े पर नमाज़ आप कभी भी न पढ़ें और न उसकी क़ब्र (समाधि) पर खड़े हों,[1] यह अल्लाह और उस के रसूल के इन्कार करने वाले हैं और मरते दम तक फ़ासिक़ रहे हैं।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿85﴾

८५. और आप को इन के माल और औलाद कुछ भी भली न लगें, अल्लाह तआला यही चाहता है कि उन्हें इन चीज़ों से दुनियावी सज़ा दे और ये अपनी जान निकलने तक काफ़िर (नाशुक्रा) ही रहें।

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ ﴿86﴾

८६. और जब कोई सूरत (क़ुरआन करीम का अध्याय) उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ मिलकर जिहाद करो, तो उन में से मालदारों का एक गुट आप के पास आकर यह कह कर इजाज़त ले लेता है कि हमें तो बैठे रहने वालों में ही छोड़ दीजिए।[2]

---

[1] यह आयत अगरचे मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय्य के बारे में उतरी है, लेकिन इसका हुक्म आम है, हर इंसान जिसकी मौत कुफ़्र और निफ़ाक़ की हालत में हुई हो, वह उस में शामिल है।

[2] यह उन्ही मुनाफ़िक़ों का बयान है जिन्होंने झूठे बहाने बना कर पीछे बैठे रहना ही अच्छा

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ (87)

८७. यह तो घर में रहने वाली औरतों का साथ देने पर रीझ गये और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, अब वह कुछ समझ-बूझ नहीं रखते ।[1]

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (88)

८८. लेकिन ख़ुद रसूल (ईशदूत) और उस के साथ के ईमानवाले अपनी मालों और जानों से जिहाद करते हैं, उन्हीं के लिए भलाई है और यही लोग कामयाबी पाने वाले हैं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (89)

८९. इन्हीं के लिए अल्लाह (तआला) ने वह जन्नत तैयार की हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वह सदा रहने वाले होंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है ।[2]

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (90)

९०. गंवारों में से बहाना बनाने वाले लोग हाज़िर हुए कि उन्हें इजाज़त दी जाये और वह बैठे रहे जिन्होंने अल्लाह से और उस के रसूल से झूठी बातें बनायीं थीं, अब तो उन में जितने भी काफ़िर है उन्हें दुखदायी अज़ाब पहुँच कर रहेगा।

समझा था أولوا الطّول से मुराद है धनवान, यानी इन लोगों को पीछे न रहना चाहिए था, क्योंकि उन के पास अल्लाह का अता किया हुआ सभी कुछ था, قاعدين से मुराद कुछ मजबूरी के सबब घर में बैठे रहने वाले आदि हैं, जैसाकि अगली आयत में उनको خوالف से मुक़ाबला किया गया है, जो خالفة का बहुवचन (जमा) है, यानी "पीछे रहने वाली औरतें ।"

[1] दिलों पर मोहर लग जाना, यह लगातार गुनाह करने के सबब होता है, जिसकी वज़ाहत पहले की जा चुकी है, इस के साथ इंसान सोचने-समझने की ताक़त से महरूम हो जाता है ।

[2] उन मुनाफ़िक़ों के ख़िलाफ़ ईमानवालों का अख़लाक़ यह है कि वह अपने तन-मन-धन से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, अल्लाह की राह में उन्हें अपनी जानों की फ़िक्र भी नहीं है और न धन की, उन के क़रीब अल्लाह का हुक्म सब से बड़ा है उन्हीं के लिए भलाई है, यानी आख़िरत (परलोक) की भलाई और जन्नत का सुख, और कुछ के क़रीब दुनिया और आख़िरत दोनों जगहों का फ़ायेदा, और यही लोग कामयाब और ऊँचे पदों पर आसीन होने के लायक़ होंगे ।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِن سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿91﴾

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوا وَّأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنفِقُونَ ﴿92﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿93﴾

९१. कमज़ोरों और रोगियों पर और उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते कोई दोष नहीं जब तक वह अल्लाह और उस के रसूल (दूत) के ख़ैरख़्वाह हों, ऐसे नेक लोगों पर कोई रास्ता नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।[1]

९२. और न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का इन्तेज़ाम कर दें तो आप जवाब देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दुःख से आँसू बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ भी हासिल नहीं।[2]

९३. बेशक उन पर रास्ता (इल्ज़ाम) है जो धनी रह कर भी आप से इजाज़त माँगते हैं, यह नारियों के साथ रह जाने पर ख़ुश हैं और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है जिस के सबब वह लाइल्म हो गये हैं।[3]

---

[1] इस आयत में उन लोगों का बयान है जो हक़ीक़त में मजबूर थे और उनका सबब भी वाज़ेह था, जैसाकि १. मजबूर और कमज़ोर यानी बूढ़े, अंधे और लंगड़े वग़ैरह मजबूर इसी दायरे में आते हैं, कुछ ने उनको रोगियों में शामिल किया है २. रोगी ३. जिन के पास जिहाद के ख़र्च उठाने की ताक़त नहीं थी और बैतुल माल (धार्मिक कोष) में भी उनके ख़र्च उठाने की ताक़त न थी, अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हक़ से मुराद है, जिहाद की उन के दिलों में तड़प, मुजाहिदीन (जिहाद के सिपाहियों) से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्मों की पैरवी करते हैं, ऐसे मोहसिनीन (परोपकारी) अगर जिहाद में शामिल होने के लायक़ न हों तो उन पर कोई गुनाह नहीं।

[2] यह मुसलमानों के एक गुट का बयान है, जिन के पास अपनी सवारियाँ भी नहीं थीं और नबी ﷺ ने भी उन्हें सवारियाँ मुहय्या कराने में लाचारी ज़ाहिर की, जिस पर उन्हें इतना दुख हुआ कि आँखों से आँसू निकल पड़े। ﷺ यानी बिग़ैर किसी लालच के मुसलमान जो किसी भी तरह से जायेज़ सबब रखते थे। अल्लाह तआला ने जो हर ज़ाहिर और छिपी बातों का जानने वाला है, उनको जिहाद में शामिल होने से अलग कर दिया, बल्कि हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने उन मजबूर लोगों के बारे में जिहाद में शामिल होने वाले लोगों से फ़रमाया: "तुम्हारे पीछे मदीने में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि तुम जिस घाटी को तय करते हो, और जिस रास्ते पर चलते हो, तुम्हारे साथ वह बदला पाने में बराबर से शामिल हैं।" सहाबा केराम ने पूछा, यह किस तरह हो सकता है, जब कि वे मदीने में बैठे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ" "सबब ने उन्हें वहाँ रोक दिया है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद और सहीह मुस्लिम नं॰ १९११)

[3] ये पाखण्डी हैं जिनका बयान आयत नं॰ ८६ और ८७ में गुज़र चुका है, यहाँ फिर उनका बयान बग़ैर किसी लालच के मुसलमानों के मुक़ाबिले में हुआ है।